REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2022

रवीन्द्र साहित्य में नारी एवम् प्रकृति

डॉ. गोपाल पाल
सहायक अध्यापक बंग्ला विभाग, देवघर महाविद्यालय,देवघर, झारखंड.

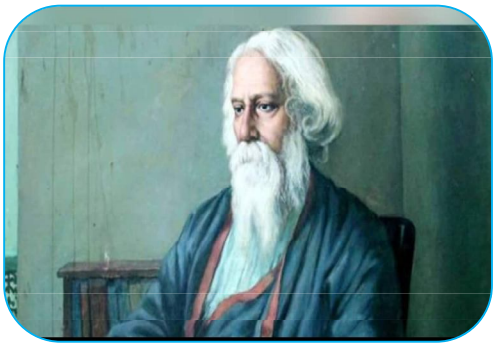

"नारी और प्रकृति" आलोचना करते हुए बंगला साहित्य में नारी एवं प्रकृति की चर्चा करने की प्रयास कर रहा हूँ। विशेष कर रविन्द्र साहित्य में नारी एवं प्रकृति के ऊपर एक साथ चर्चा का अंश वर्णित हुआ है।

इस अध्याय में प्रकति विध्वंस के कारण को संक्षिप्त में वर्णन कर रहे हैं– वर्तमान में प्रत्येक कदम–कदम पर प्रकृति के ऊपर मानव जाति का अत्याचार देखा जा रहा है। दिन पर दिन कल–कारखाना के बढ़ने से कार्बनडाई ऑक्साईड गैस के कारण हवा का संतुलन बिगड़ रहा है। इसे छोड़ कर प्रतिदिन जनसंख्या बढ़ रही है, अपनी जरूरत के लिए जहाँ बड़ी–बड़ी इमारतों का निर्माण हो रहा है वहीं दूसरी ओर जंगलो को तेजी से काटा जा रहा है। जिस तरह सामुद्रिक जीव विध्वंस हो रहा है उसी तरह सामुद्रिक सौन्दर्य समाप्त हो रहे हैं। जहाँ प्लास्टिक के व्यवहार से मिट्टी की जलधारण क्षमता नष्ट हो रहे हैं वही मिट्टी की ऊर्वरता शक्ति नष्ट हो रहे हैं इसके अलावा अत्याधिक गाड़ियों की व्यवहार, परिवेश के ऊपर अत्याचार चल रहा हैं नाना प्रकार के प्राकृतिक सौन्दर्यमयी ममतामयी मूर्ति के परिवर्तन होते–होते भीषण भयावह रूप देखा जा रहा है।

बंगला साहित्य में नारी एवं प्रकृति एक दूसरे के परिपुरक तथा प्राचीन साहित्य विशेष कर चर्चा का विषय रहा है। ऐसा कि मध्ययुग में भी बंगला साहित्य प्रकति का भयावह रूप देखने को मिलता है जैसे मनसामंगल, चंडीमंगल काव्य परिवर्तनकाल में भी आधुनिक साहित्य में बंकिमचन्द्र ने भी नारी रूप के साथ चर्चा किये हैं। मधुसुदन, ताराशंकर विभुति, और शरतचंद्र ने भी नारी और प्रकति समानता रखने की कोशिश की है। आगे रविन्द्रनाथ भी नारी और प्रकति का एक साथ वर्णन किये हैं। जैसे रविन्द्रनाथ ने दो नारी के ऊपर कविता लिखा है।

"एक उर्वशी सुंदरी ,
विश्व की कामना राज की रानी
स्वर्ग की अप्सरा
दूसरी लक्ष्मी या कल्याणी
विश्व ने उसे जननी जाना
स्वर्ग की ईश्वरी"[1]

अर्थात् एक उर्वशी, सुन्दरी जिसे कहा जाता The Eternal Women और दूसरा लक्ष्मी रूप में या कल्याणी रूप में या मातृरूप जिसे Absolute Women कहा जाता है, इसे छोड़कर एक और रूप के बारे में

रवीन्द्रनाथ ने कहा है वह है विद्रोहीनी रूप । ठीक उसी तरह प्रकृति के भी तरह–तरह रूप का परिचय मिलता है । रवीन्द्रनाथ चित्रकाव्य रात और प्रभात कविता में प्रकृति और नारी को एक नजर देखते हैं–

"रात में प्रेयसी के रूप में
तुम आई प्रानेश्वरी,
सुबह कब देवी रूप में
तुम सम्मुख मुस्काई" ...[2]

रवीन्द्रनाथ यहाँ बताना चाहते हैं कि प्रकृति के माया में सुन्दर रात प्रियतमा के रूप में और सुप्रभात में देवी के रूप में पोस्ट मास्टर की कहानी विसादमय प्रकति एवं रतन के नारी हृदय का जब कोलकाता से पोस्टमास्टर रतन को छोड़कर दूसरे जगह जा रहे हैं, तब रतन का बालिका हृदय बोल रही है "नहीं जाने देंगे" परन्तु जीवन और प्रकृति को कोई बदल नहीं सकता है पोस्ट मास्टर के विदाई के समय में उनके हृदय में यही दर्द महसुस हो रहा है कि जीवन में कितना उतार–चढ़ाव, कितना दुःख तकलिफ, कितना मृत्यु है। फिर घुम कर क्या फायदा फिर "पृथ्वी पर कौन किसका" ।

"त्याग" कहानी में प्रकृति एवं नारी के बीच से प्रेम की जीत हुई है। फाल्गुन महिना की पहली पूर्णिमा मे आम मोंजर के बसंत बहार है। नदी के तीर पर एक पुरानी लिच्ची के पेड़ घने पते के बीच से होकर नीद्राहीन घर में प्रवेश कर रहे हैं। हेमन्त जैसे इस परिवेश में नई दुल्हन को अपनी गम्भीर प्रेम के ओर आकर्षित कर रहा है। मगर दुःख के विषय यह है कि कुसुम हमत की प्यार भरी आवहन पर नहीं आ सकी वह नारी एक अंजान भय से ग्रसित है। नारी कभी कोमल तो कभी भीषण रूप धारण करती है। दिन पर दिन अत्याचार सहने के कारण वह एक दिन वीरांगना बन कर उसका विरोध करने के लिए बाध्य हो जाती है। जैसे जलवायु, आकाश, पृथ्वी सभी जैसे दिन पर दिन अत्याचार सहते–सहते अचानक विध्वंसक रूप धारण कर लेती है। जैसे भूकम्प, बाढ़, तुफान, गर्मी आदि।

"महामाया" कहानी में प्रकृति व मानव का भीषण रूप देखते हैं। कुलीन ब्राह्मण महामाया राजीव को प्यार करते हैं पर राजीव कुलीन ब्राह्मण नहीं था इसलिए उसकी शादी एक शमशान यात्री वृद्ध से कर दिया गया। वृद्ध का मृत्यु होने के उसकी सतीदाह कर दिया। गया जिसमें वह किसी तरह अधजली अवस्था में बच गयी। जले हुए चेहरे को वह घुंघटे से ढके रखती थी उसी हाल में राजीव के पास चली आयी। पर राजीव का उसे छूने का हक नहीं था। एक दिन चाँदनी रात में राजीव ने महामाया को ढके चेहरे को देखने की बहुत कोशिश की उस रात प्रकति में सुनसान चाँदनी रात में पृथ्वी भी जाग रही थी राजीव भी अपनी नींद त्याग कर खिड़की के पास बैठा रहा, वन से सुगन्ध एवं झिल्ली– शांत घर में प्रवेश किया, आज वर्षा की इस शांत व वातावरण में यह रात भी महामाया की तरह सुंदर व गंभीर दिख रहा है। वह पूरी तरह से महामाया की तरफ आकर्षित हुआ। वह महामाया के रूप को देखने के लिए व्याकुल हुआ–अधजली, भयानक, जले के निशान थे। महामाया उठ पड़ी। आलिंगन से बचने के लिए दोनो घर से बाहर निकल गयी। अर्थात् उस वर्षा रात में जले हुए जंगल से जला हुआ गन्ध झिल्ली के शांत वातावरण के बीच से हाहाकार एक साथ नजर आता है। महामाया का नारी जीवन जले हुए चेहरे की चिन्ह, रहस्यों को जीवन का हाहाकार एक साथ नजर आता है ।

"मध्यवर्तिनी" कहानी का मूल यही है कि घनघोर परिवेश का हर सुंदरी के मन का दर्द यही है कि उनका कोई औलाद नहीं है फिर उनका पति शैलवाला के साथ शादी करते हैं फिर हरसुंदरी का दर्द बादल के गड़गड़ाहट के साथ मिलता है एक दिन तेज बारिस के चलते घर का काम काज करना मुश्किल है बाहर बैर का पेड़ नीचे का घास–फुस भी पानी में डुब गया है। बाहर दिवार के बगल से जोर वर्षा का पानी कल–कल करके वह रहा है। कम उम्र जब शैलवाला माँ बनने से मर जाती है। उस दिन भी प्रकृति पर दुःख और विशाद का छाया था। रवीन्द्रनाथ नाटक और उपन्यास में नारी और प्रकृति का मिलन लिखे हैं।

"रक्तकरबी" नाटक नंदिनी का विद्रोहनी का राज देखने मिलता है। वहां प्रकृति प्रतिवाद के भाषाकी बात करती है। प्रकृति दम घुटने के कारण मुक्त होने बिपलव के आवाज देती है। चित्रांगदा नाटक में भी प्रकति यही रूप और अर्जुन को बताया– मिलता है कि चित्रअंगदा फुलवारी से फुल तोड़कर साधना, पुजा अर्चना की

"नही देवी, नही सामान्य नारी,
पुजा करि मोरे राखीबे उर्ध
से नहीं नही
यदि पार्श्व राखे मोरे
संकटे सम्पदे
सम्मति दाउ यदि कोरिते
सहाय होते पारो तवे तुमि चिनिते मोरे,"[3]

अर्थात–चित्रांगदा समझा रही है मैं कोई देवी नही, न कोई साधारण नारी। जब यमुना नदी में तरंग आता है रह–रह कर हवा उसे चुमती है। अशोक पेड़ से नये पत्ते निकल कर बसंत ऋतु आमंत्रण कर रही है। आओ बसंत धरती पर। रवीन्द्रनाथ ने प्रकृति को कभी मोहिनी, कभी जीवन देने वाला देवी रूप में रचना कर रहे हैं। प्रकृति नारी को कवि एक में देख है। कवि प्राण मुक्त हवा, मुक्त रोशनी प्रार्थना कर धरती पर जीना चाहतें और इस भगवान से प्रार्थना कर रहें हैं।

"एबार फिराउ मोरे लये जाउ संसारेर तीरे
हेकलपने, रंगमयी, दुलाए ना समीरे समीरे
तरंगे आर भुलाए ना मोहीनी मायाए
बिजन बिसादघन अनंतेर निकुन्ज छायाय
रेखोना बसायआर। दिन जाय, संध्या हये आसे"[4]

नारी को अपनाने के लिये उसे प्यार करना पड़ता है उसी तरह प्रकृति को अपनाने के लिए उसे प्यार करना पड़ता है औरत कमी भी बन्धन में नहीं रहना चाहती जैसे "कंकाल" का कनकचापा लड़की, या "लब्रेटोरी" कहानी के सोहनी "एकरात्री" का सुरवाला, अथवा "मुसलमानीर" लेख ब्राह्मण रमनी कमला कैसे मूसलमानी बनती है।

कवि नारी को मुक्त करने के लिए अनीला, मृणाल, निरूपमा, जैसे नारी समाज के लिए जीना चाहती थी, मगर समाज जीने नहीं दिया। इस कारण उन्होंने विरंगना के रूप धारण की। उसी तरह सुन्दर प्रकृति के उपर समाज भी तरह–तरह का अत्याचार कर रहा है, हो सकता प्रकृति में नदी, तालाब, समुंदर, पेड़–पौधे के बोलने की क्षमता नहीं है, हो सकता है प्रकृति के उपर समाज का अत्याचार प्रतिवाद की भाषा न रहने पर भी निरूपमा जैसी प्रकति विध्वसं के पथ चली जायेगी यदि विध्वंस से कोई भी बचे रहे तो कहेंगे –

"मरिते चाहिना आमि सुन्दर भुवने
मानबेर माझे आमि बाँचिवारे चाई।"[5]

Kitts say's - "think of beauty is jay for ever
Its love lines in creases; it will never
Pass into nothingness, but still will keep.
A bower quiet for us"- - - - - - - - - - -

संदर्भ–सूची

"Balaka" dui nari,	RABINDRA RACHANABALI VISHWA BHARATI- Rabindra Nathe Tegore-GRANTHAN BIBHAG – KOL-17 Publisher- Sri Ashok Mukhopadhayay – Reprint-1994, Page No. 67
"Chittra", Rate O Private.	Rabindra Nathe Tegore ,VISHWABHARATI GRANTHAN BIBHAG-KOL-17, Publisher – Sri Jagadindra bhomik-Reprint -1908, Page No- 139
"Chittra", Ebar Firao More.	Rabindra Nathe Tegore, Same Page No-27

"Korio Komal", Pran Rabindra , Rabindra Nathe Tegore GRANTHAN BIBHAG – KOL-17 Publisher- Sri Ashok Mukhopadhayay - Reprint-1994, Page No- 148

"Endymion" John keats Published by. Taylor and Hessey